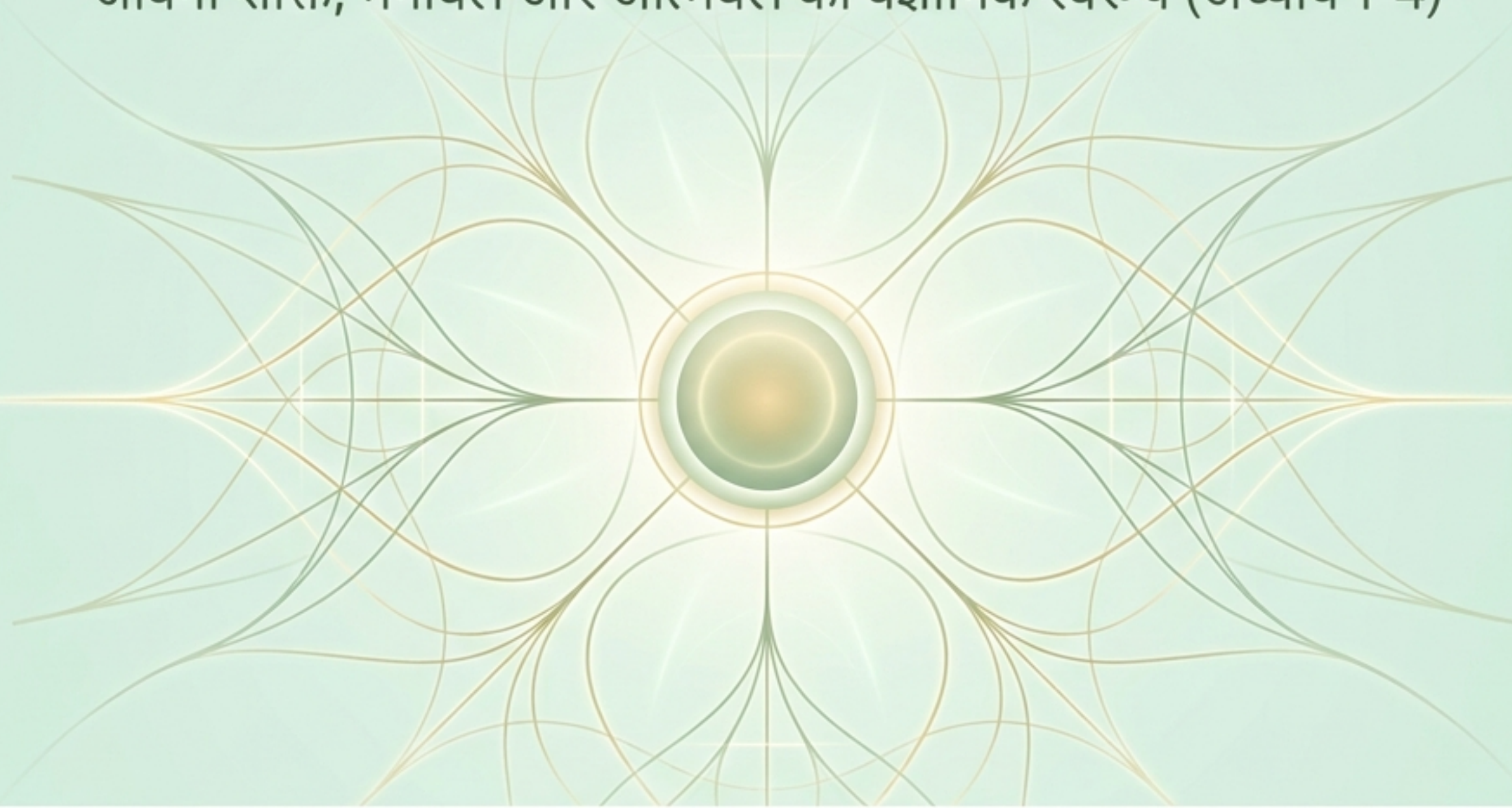


युग की माँग: प्रतिभा परिष्कार (भाग - 1)

जीवनी शक्ति, मनोबल और आत्मबल का वैज्ञानिक स्वरूप (अध्याय 1-4)

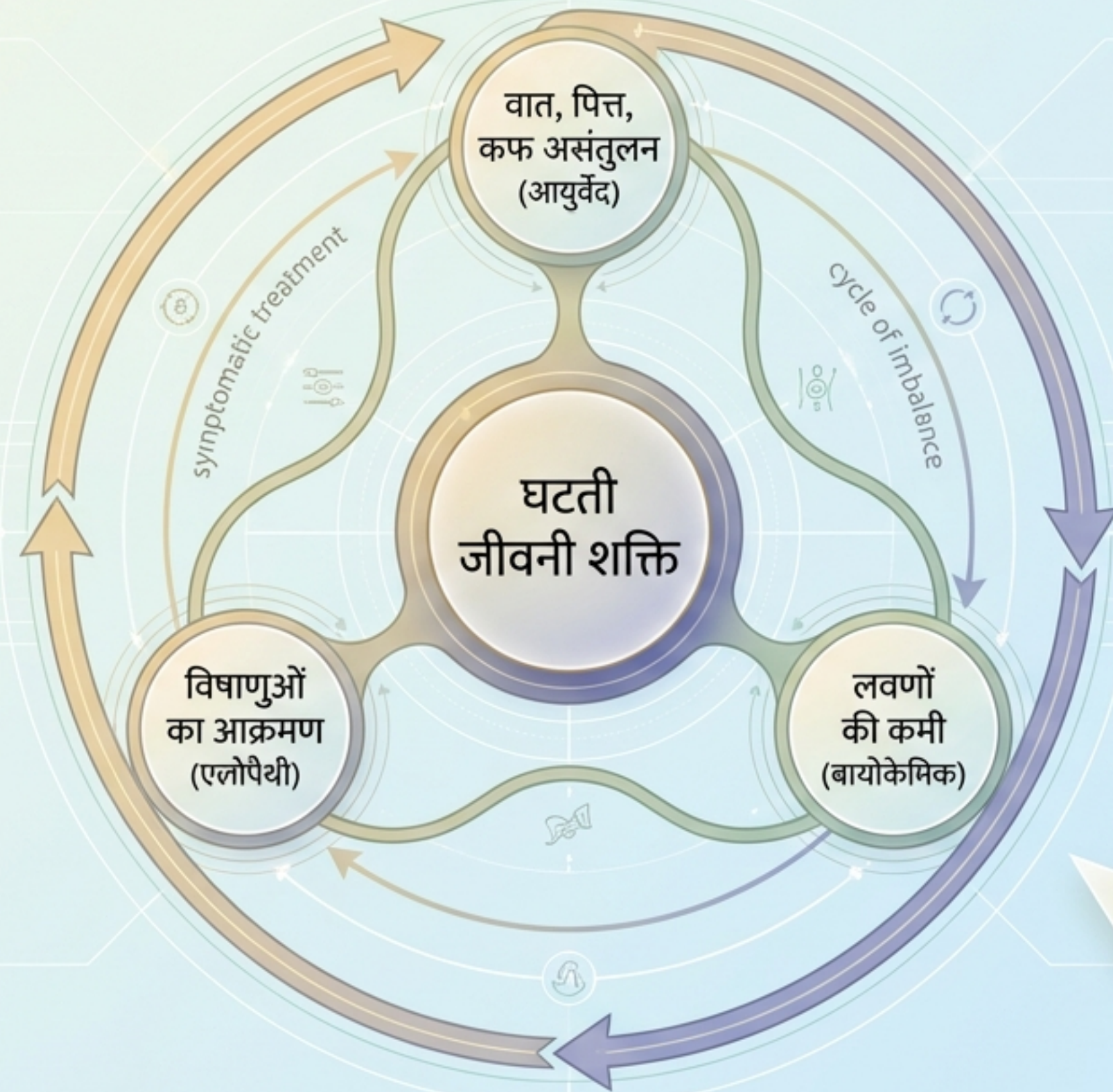


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।” और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि सबसे कहियेगा सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शौं क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

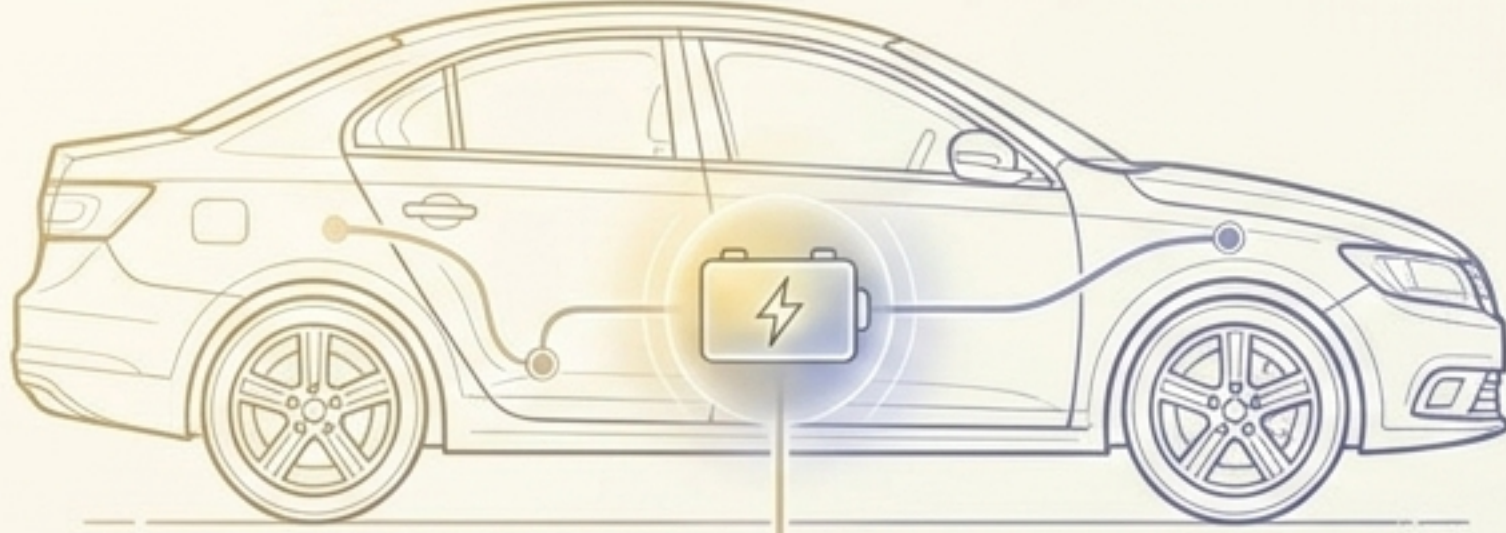
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अस्वस्थता का मूल कारण: चिकित्सा तंत्र की विडम्बना



चिकित्सा तंत्र तूफानी गति से बढ़ रहा है, फिर भी बीमारियाँ (दमा, कैंसर, एड्स) क्यों बढ़ रही हैं? क्योंकि असली समस्या शरीर में नहीं, हमारी ‘प्राण विद्युत’ की कमी में है।

शरीर विज्ञान: मोटर और प्राण विद्युत की तुलना

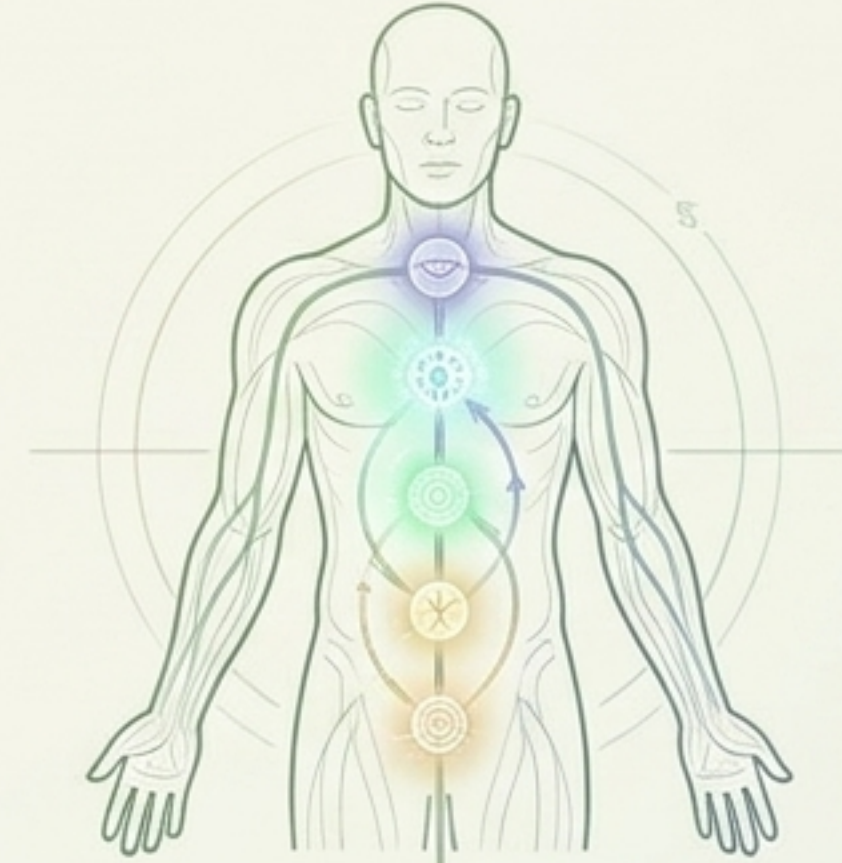


मोटर

डॉचा: लोहा, काँच, रबर

ईंधन: पेट्रोल / बैटरी

परिणाम: गतिशीलता



शरीर

डॉचा: हाड़-माँस, रक्त, त्वचा

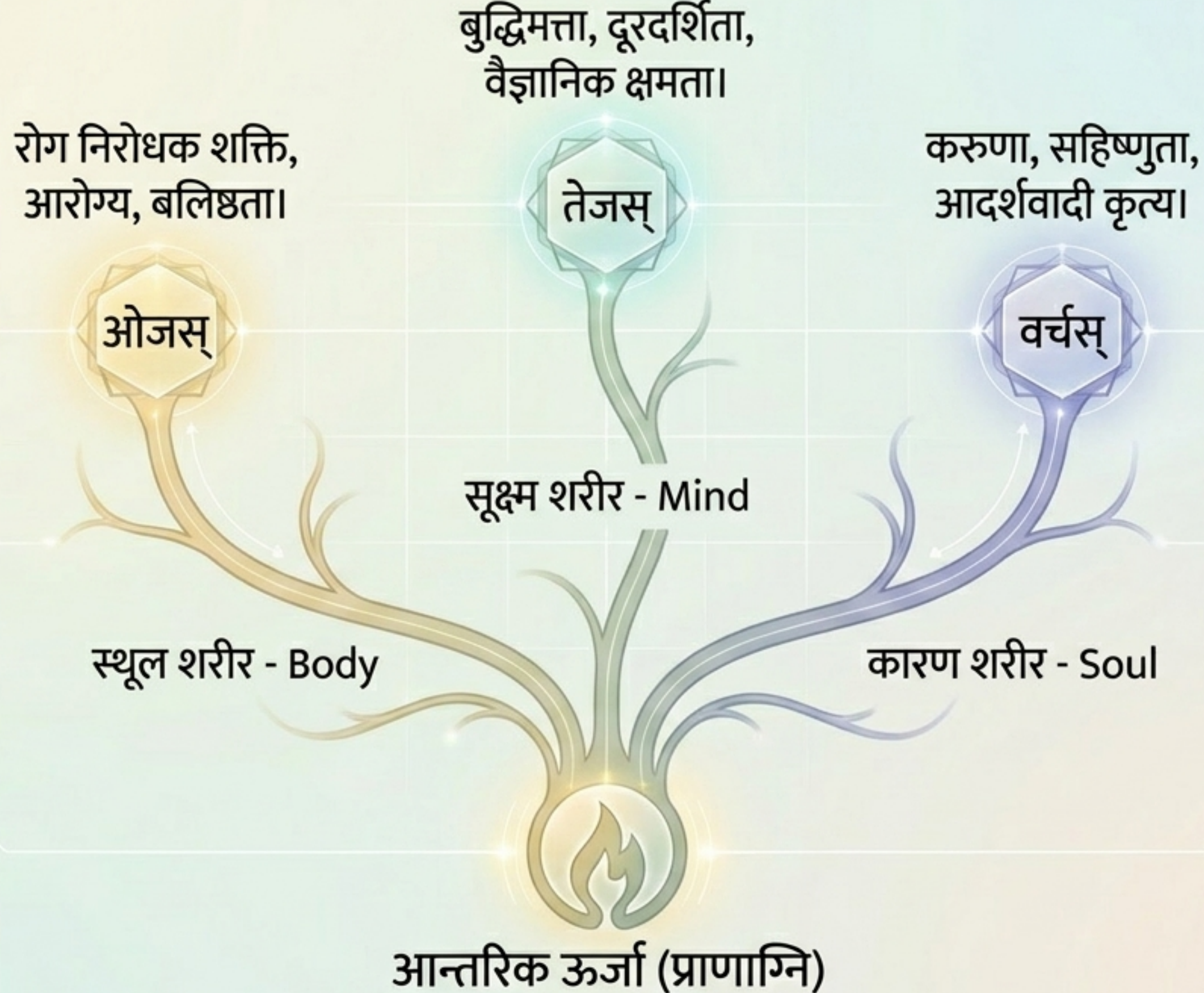
ऊर्जा: प्राण विद्युत / जीवनी शक्ति

परिणाम: स्वास्थ्य और पराक्रम

पेट्रोल के बिना महँगी मोटर भी बेकार है, वैसे ही 'आंतरिक ऊर्जा' के बिना हृष्ट-पुष्ट शरीर भी निर्जीव और निस्तेज है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के)

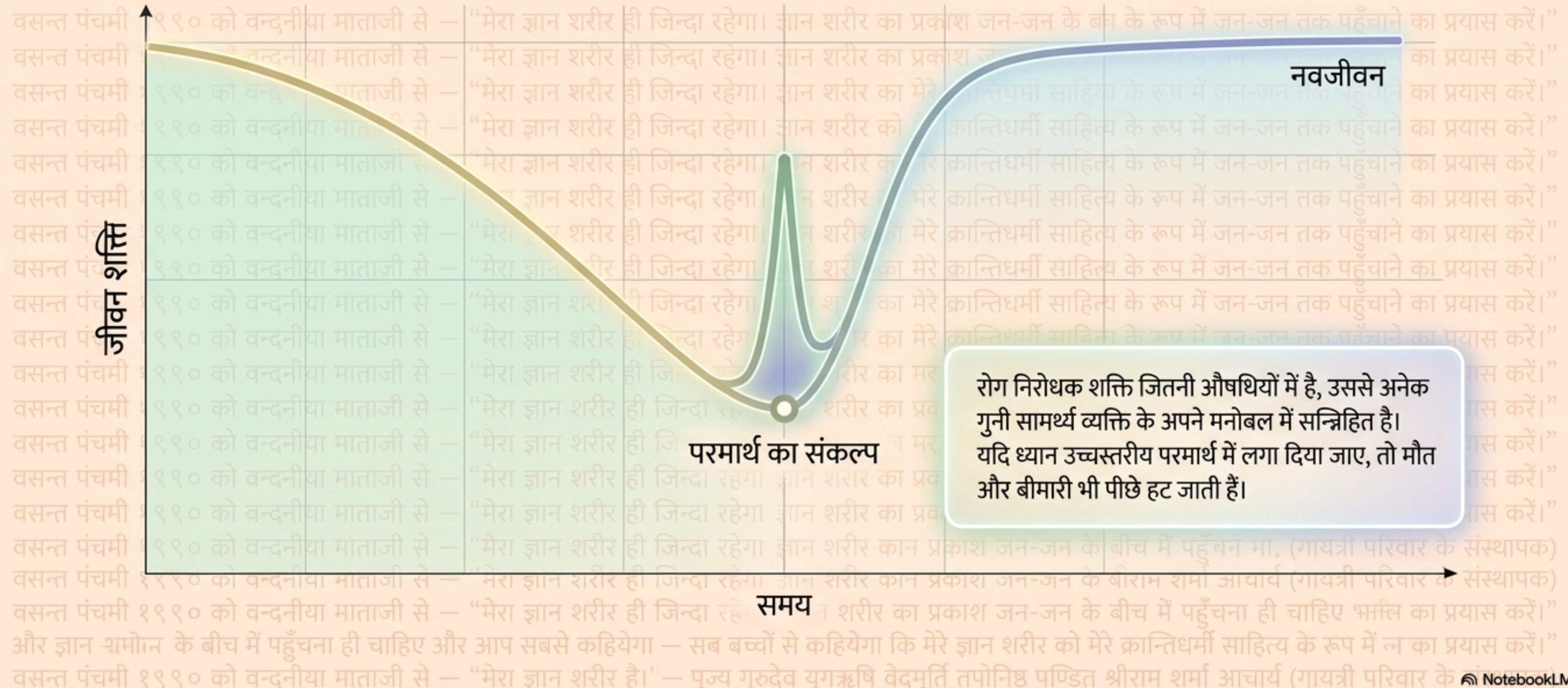
मानवीय सत्ता के तीन ऊर्जा केंद्र



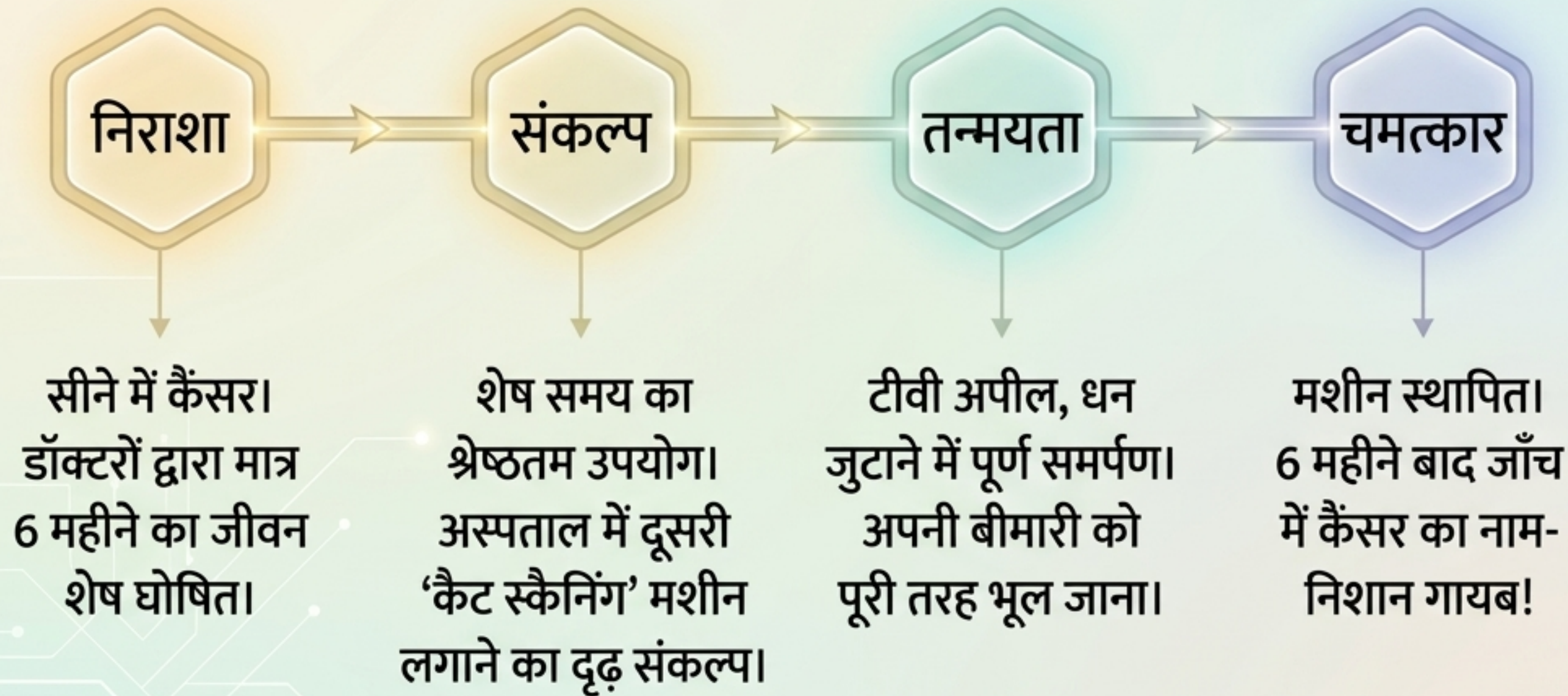
वराल्ल पंथमी १९९० को
वन्दनीया माताजी ले — "नैरा ज्ञान सरीर ही
तिष्ठ रहैषा। सत्तन शरीर का प्रकाश अन-अन के
बीच में पहुँचना ही चालिग और साप सबले कहियोमा
— सब बख्ती से कहियोना कि यैरे ज्ञान सरीर को मेरे
काचिन्मार्गी साहित्य के रूप में अन-अन तक
पहुँचाने का प्रयास कर्नौ" — पूज्य गुरुदेव गुणकपि
वेदगुप्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आपार्व
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

मनोबल की प्रचण्ड शक्ति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा



मनोबल का वैज्ञानिक प्रमाण: पैट्रिक मेरी (इंग्लैंड, 1981)



मृत्यु को परमार्थ में भुला देने से नई 'स्वस्थता सामर्थ्य' उभरती है।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए
— सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

इतिहास गवाह है: 'असंभव' मूर्खों के शब्दकोष में है



कुमारजीव: निर्धन परिवार से होकर भी रेगिस्तान पार किया और चीन व जापान तक भारतीय संस्कृति का विस्तार किया।



चाणक्य: साधारण ब्राह्मण का संकल्प, जिसने सिकंदर के आक्रमणों को उखाड़ फेंका और एक अखंड साम्राज्य की स्थापना की।



नेपोलियन: अदम्य संकल्प, जिसने प्रकृति के दुर्गम अवरोध (आल्प्स पर्वत) को मार्ग देने पर विवश कर दिया।



फ्लोरेंस की महिला: प्रेम और संकल्प शक्ति से 20 वर्षों तक अपने यौवन और रूप-लावण्य को स्थिर रखा।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

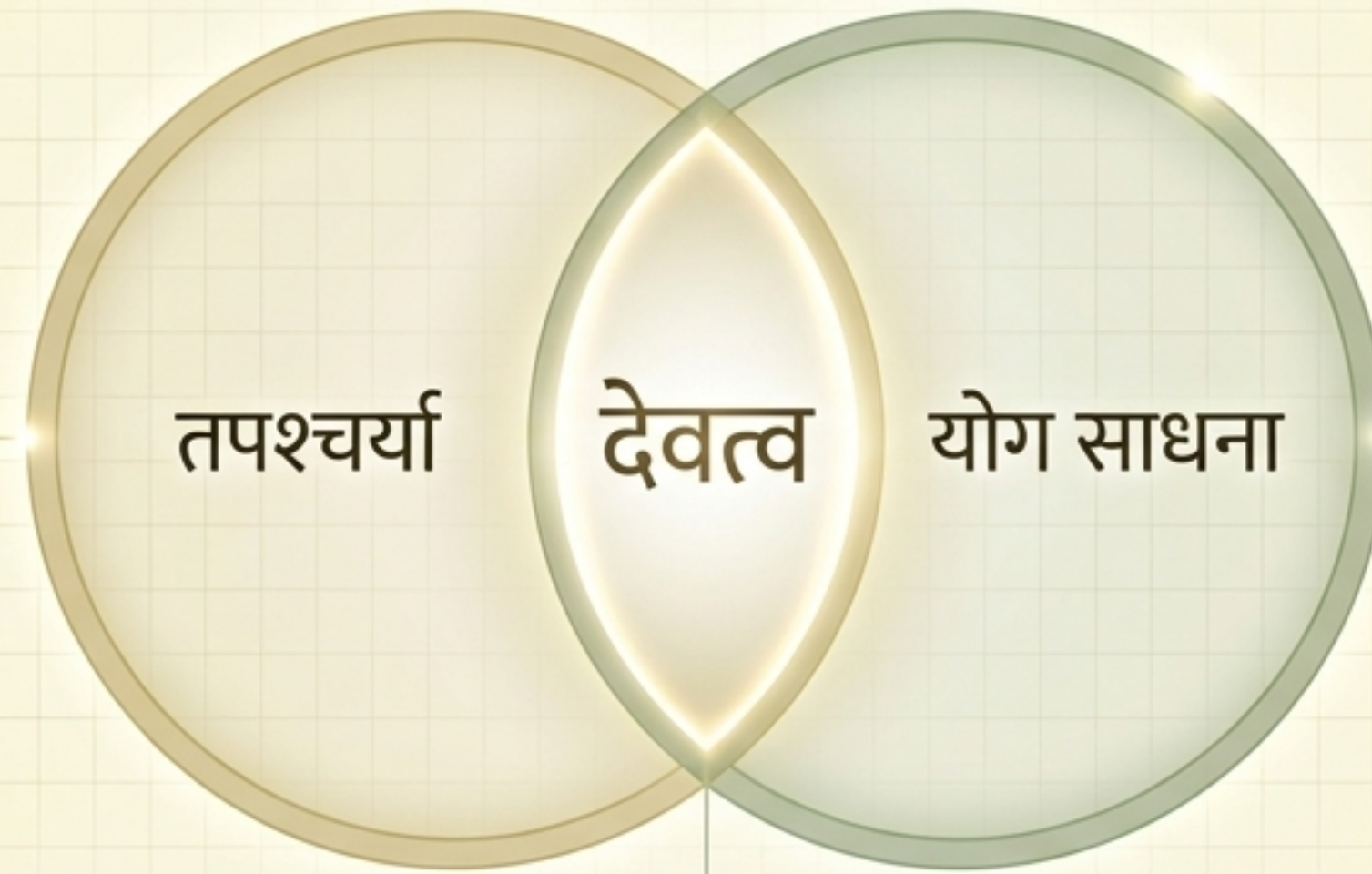
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-
जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव पुगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

आत्मबल ही सर्वोपरि: चमत्कार नहीं, विज्ञान

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



भारत को ‘स्वर्ग’ या ‘जगद्गुरु’ क्यों कहा गया?
क्या यहाँ जादू होता था?

नहीं! योग विद्या कोई बाजीगरी नहीं है। यह एक अत्यंत उच्चकोटि का विज्ञान है जो मानव के भीतर की प्रसुप्त प्राणाग्नि को जाग्रत करता है। ऋद्धि-सिद्धियाँ आसमान से नहीं टपकतीं, वे मनोबल के विकास का परिणाम हैं।

योग और तपश्चर्या का वास्तविक विज्ञान

तपश्चर्या (शरीर प्रधान)

संयम अपनाना, अनुशासित रहना,
कष्टसाध्य परिस्थितियों में अडिग रहना
(तितिक्षा)।

लक्ष्य: प्रामाणिकता

योग साधना (मन प्रधान)

मन को अवांछनीयताओं से मुक्त करना।
अव्यवस्थाजन्य दुष्प्रवृत्तियों को नष्ट कर
आंतरिक व्यवस्था स्थापित करना।

लक्ष्य: प्रखरता

इन दोनों के समन्वय से
सुप्त क्षमताएँ जाग्रत होती हैं।

वसन्त पंचमी १९१० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना
ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन
तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— गुरु गुरुदेव
युगकवि वेदवर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

शरीर नहीं, तेजस् (Aura) जीतता है



भारी ब्रिटिश साम्राज्य



92-pound गाँधी

तथ्य:

एम.के. गाँधी (वजन: 92 पौंड)।
ब्रिटिश वायसराय को निर्देश था:
“गाँधी की आँखों में आँखें न डालें,
वे वशीभूत कर लेते हैं।”

अंतर्दृष्टि:

यह 92 पौंड का ‘बम का गोला’ शारीरिक बल नहीं,
उनकी योग-साधना और सत्य निष्ठा की प्राणाग्नि थी।
महान आंदोलनों के जन्मदाता (लेनिन, बिनोवा भावे)
इसी आंतरिक व्यवस्था बुद्धि से करोड़ों पर हावी हुए।

प्रतिभा सम्बर्धन के दो आधार

उत्कृष्ट
प्रतिभा

साहसिकता

उच्चस्तरीय
हिम्मत और
पौरुष। अवरोधों
से टकराने
की क्षमता।

सुव्यवस्था

कार्यक्षमता,
प्रबंध कौशल
और जीवन का
आत्म-निर्माण।

मनुष्य स्वयं अपना मित्र है
और स्वयं अपना शत्रु।
ईश्वर मात्र उनकी सहायता करता है,
जो अपनी सहायता आप करते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचाना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा –
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगकृषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

आधार 1: साहसिकता और हमारी 93% सुप्त क्षमता

7%: औसत मनुष्य अपनी मानसिक क्षमता का मात्र 7% शरीर यात्रा व उदर पूर्ति में खर्च करता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

93%: सामर्थ्य सोई, मूर्च्छित या अविज्ञात पड़ी रहती है।

बहादुर जिंदगी में एक बार मरते हैं,
कायर पग-पग पर।
हर परमाणु में अजस्र शक्ति है,
आवश्यकता मात्र प्रसुप्ति के जागरण की है। साहस उस 93% ऊर्जा का ताला खोलने वाली चाबी है।

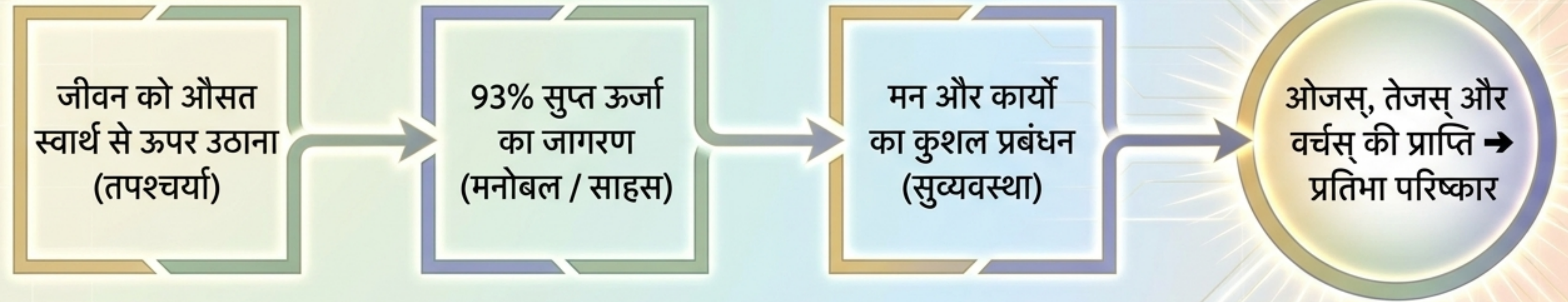
वसन्त पंचमी १९१० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आधार 2: सुव्यवस्था (प्रबंध कौशल)



बड़े उद्योगों और सफलताओं की प्राणशक्ति ‘कुशल प्रबन्धकों’ पर टिकी होती है।
अव्यवस्थित वैभव क्षण भर में नष्ट हो जाता है, पर सुव्यवस्थित तत्परता से असम्भव सम्भव हो जाता है।

सार संक्षेप: आपकी प्रगति का ब्लूप्रिंट



पारस को छूकर लोहा सोना बने न बने, प्रतापी व्यक्ति असंख्यों को अपना अनुयायी बना कर उन्हें नया जीवन देते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आत्मविस्मृति के दलदल से जागें

अपनी दौलत भरी तिजोरी की चाबी खोकर दरिद्रों की तरह न जिँएँ।
अपनी बुरी आदतों को बुहारें, दृष्टिकोण में मानवी गरिमा लाएँ। यही देवमानव बनने का मार्ग है।

अपनी प्राणाग्नि को जगाएं। आज ही साहस और सुव्यवस्था को अपनाएं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहिये कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)